3119

अवध और ब्रज की लोकप्रचलित 'होरी' गायकियों का स्वरूप और उनका तुलनात्मक अध्ययन

सारांश

CHAUDHARY CHARAN SINGH UNIVERSITY, MEERUT

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ

19 65

यत्र सत्यस्य परमं निधानम्

संगीत में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

२०१८

शोध निर्देशिका
डॉ. रेखा रानी तिवारी
प्राचार्या
राजकीय महिला महाविद्यालय
खरखौदा, मेरठ

शोधकर्त्री
शालिनी गुप्ता
Shalini Gupta

सारांश

हमारा देश कृषि प्रधान देश है। जब खेती की व्यस्तता बढ़ जाती है, उस समय कर्म में उत्साह और श्रम के परिहार के लिये स्थिति – परिस्थिति के अनुरूप भाव–गीत लोक कंठ से फूट पड़ते हैं। साहित्य जीवन की शाश्वत अभिव्यक्ति है। जनजीवन सुख–दुखात्मक अभिव्यक्ति की जो चेष्टायें करता आ रहा है उसी के परिणाम स्वरूप अनेक कलाओं का उद्‌भव होता आया है। इस प्रकार मानव मन की रागात्मक–विरागात्मक अनुभूतियाँ गेय बनकर आकार लेती है।

महीने ऋतु तथा फसल के अनुसार गीतों का गायन होता है – सावन, कजरी, चैती, बारहमासा, मल्हार, कहरवा आदि। किन्तु बसन्त ऋतु के पर्व होली पर एक अपूर्व उत्साह तथा आनन्द का वातावरण निर्मित होता है। इस ऋतु में विविध रंगी पुष्पों की बहुलता होती है। उन पुष्पों का स्पर्श कर बहने वाली बयार मानव मन को मादक बना देती है। अतः उल्लासित मन का उत्साह एक उत्सव के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

फागुन मास का प्रारम्भ होते ही जब जन जीवन आमोद–प्रमोद और उल्लास में रससिक्त हो रहा होता है उस समय होली का त्यौहार लोक प्रचलित अनेक विधाओं का वर्ण्य विषय बन जाता है।

वैसे तो सम्पूर्ण भारत में होली का त्यौहार बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है, पर उनमें अवध और ब्रज क्षेत्रों की होली पर गाये जाने वाले गीतों की

एक सुदीर्घ परम्परा देखने को मिलती है। इन होरी गीतों के विषय में पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है। परन्तु इनके सांगीतिक पक्ष पर बहुत कम प्रकाश डाला गया है। अवध और ब्रज की होरियों पर पृथक रूप से कतिपय शोधकार्य हुये परन्तु दोनों क्षेत्रों के होली गीतों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य लक्ष्य है।

यद्यपि होली की अवधारणा सभी क्षेत्रों में समान रूप से पायी जाती है, परन्तु क्षेत्र विशेष की निजी सांस्कृतिक परम्परा एवं लोकव्यवहार के अनुसार उनका विकास भिन्न प्रकार से होता आया है। यह भिन्नता ही उनके निजी वैशिष्ट्य की द्योतक है।

इस प्रकार उत्सव की समान अवधारणा के बावजूद गीतों में भिन्नता दृष्टिगत होती है। इस शोधकार्य में अवध और ब्रज की होरियों को स्वरलिपिबद्ध कर उनमें पायी जाने वाली समानता एवं भिन्नताओं का तथ्यान्वेषण किया गया है।

जनमानस की अवधारणा है कि ब्रज क्षेत्रों में ही होली गीतों की प्रचुरता और प्रधानता है और अवध में छिटपुट होली–गीत मिलते हैं। यह अवधारणा बिल्कुल निर्मूल है। अवध के होली गीतों का साहित्य उतना ही समृद्ध है जितना कि ब्रज का श्री राम और कृष्ण की जन्मस्थली के रूप में सुविख्यात अयोध्या एवं मथुरा नगरी के सांस्कृतिक एवं संगीतिक वैभव की महत्ता का वर्णन ग्रंथकार अपने ग्रंथों व पुस्तकों में करते आये हैं। अयोध्या में जहाँ श्री राम और सीता को प्रमुख पात्र बनाकर होली गायन विधा का आनन्द लिया जाता है, वहीं ब्रज भूमि मथुरा में श्री कृष्ण और राधा

जी को गोपियों के साथ होली का आनन्द लेते हुये गायन के माध्यम से वर्णित किया जाता है। दोनों क्षेत्रों का वैशिष्ट्य किस प्रकार उनके लोकगीतों में ध्वनित होता है, इस तथ्य को प्रदर्शित करने का प्रयास मैंने अपने शोधकार्य में किया है। जिसका विषय है – ''अवध और ब्रज की लोकप्रचलित 'होरी' गायकियों का स्वरूप एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन''।

श्री राम और श्री कृष्ण के चरित्रों में अन्तर संस्कृति की दो भिन्न धाराओं को प्रकट करता है। राम मर्यादा पुरूषोत्तम हैं तो कृष्ण स्त्री–पुरूष प्रेम के उदार उदाहरण। चरित्र की ये विशेषता दोनों क्षेत्रों के लोक साहित्य को ही नहीं वरन् वहाँ के लोकसंगीत को भी प्रभावित करती रही हैं। सामाजिक मर्यादाओं से छूट लेने की वृत्ति ने ब्रज के लोकसाहित्य में एक अलग तरह का आकर्षण भर दिया है। कृष्ण के प्रति गोपियों के सहज आकर्षण ने प्रेम के अनन्त द्वार खोल दिये। यहाँ भावना की प्रचुरता ने ब्रज के इन लोकगीतों के संगीत में रसात्मकता को एक विस्तृत फलक प्रदान किया है। उधर अवध में मर्यादा के प्रति सचेत रहने के कारण प्रेम जैसे भावों का वैसा विस्तार सम्भव न हो सका। इन गीतों में इसलिये क्रियाएँ, चेष्टाएँ घटनाएँ व मस्ती तो है, परन्तु उन भावनाओं के प्रकटी करण की एक मर्यादा दिखाई पड़ती है। अवधी गीतों की विषयवस्तु पर इस गरिमामय स्वरूप का गहरा प्रभाव पड़ा।

किन्हीं दो क्षेत्रों के संगीत का अध्ययन दोनों क्षेत्रों के सूक्ष्म अध्ययन की मांग करता है। किसी एक क्षेत्र के संगीत को समझना अपेक्षाकृत आसान है, क्यों हमें

उसी क्षेत्र के समाज और संस्कृति का अध्ययन करना होता है और उन्हीं के परिप्रेक्ष्य में कला की व्याख्या की जाती है। लेकिन जैसे ही हम दो अलग–अलग क्षेत्रों के संगीत की व्याख्या में प्रवृत्त होते हैं, तब हमारा अध्ययन क्षेत्र बहुत विस्तृत हो जाता है।

अपने शोध कार्य को एक निश्चित स्वरूप प्रदान करने के लिये मैनें इसे पांच अध्यायों में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय "उत्तर भारतीय समाज और संस्कृति" इस अध्याय में उत्तर प्रदेश के लोगों के रहन–सहन, खान–पान व उनके निजी वैशिष्ट्य का वहाँ के लोकगीतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। लोकगीतों का विषय क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है मानव के जन्म के पूर्व से ही उसका क्षेत्र प्रारम्भ हो जाता है और उसके मृत्यु पर्यन्त चलता रहता है। चूँकि अवध व ब्रज दोनों ही क्षेत्र एक ही प्रान्त के हैं इसलिये इस प्रान्त के समाज, संस्कृति व उनके लोकगीतों व गायन शैलियों का सूक्ष्म अध्ययन अति महत्वपूर्ण था।

शोध का द्वितीय अध्याय है– "अवध की सांस्कृतिक परम्परा में होरी गायन शैली" इस अध्याय मे अवध क्षेत्र के इतिहास, वहाँ के सांस्कृतिक व सामाजिक पहलुओं का अध्ययन किया गया है और अवध क्षेत्र में गायी जाने वाली होरी गायन शैलियों पर विचार किया गया है।

शोध कार्य का तृतीय अध्याय है– ''ब्रज की सांस्कृतिक परम्परा में होरी गायन शैली'' इसमें ब्रज क्षेत्र में गायी जाने वाली होरी गायन शैलियों व उन पर पड़ने वाले वहाँ के समाज व संस्कृति के प्रभावों का अध्ययन किया गया है।

काव्य की दृष्टि से यह विषयवस्तु मोटे तौर पर एक–सी लगती जरूर है पर कृष्ण और राम के चरित्र की मौलिक भिन्नता के कारण उनमें काफी अन्तर आ गया है। ब्रज और अवध की होली गायकियों में अन्य सांस्कृतिक और सांगीतक कारणों से भी अलग–अलग वैशिष्ट्य उत्पन्न हुआ है।

शोध का चतुर्थ अध्याय है– ''अवध और ब्रज की होरी गायकियों का तुलनात्मक विश्लेषण'' इसमें दोनों क्षेत्रों में लोकसंगीत की अपनी–अपनी परम्पराओं का वहाँ की होरी गायकियों पर निर्णायक प्रभाव पड़ा है। ब्रज और अवध की होरी गायकियों में अन्तर है यह तो निश्चित है, लेकिन इस अन्तर के मूलभूत कारण क्या हैं इसको समझने के लिये अनेक ग्रंथों से प्राप्त सामग्री, संगीत के अनेक विद्वानों व गायकों के साक्षात्कार, होली गीतों से सम्बन्धित उपलब्ध रिकॉर्डिगंस तथा लोक गायकों से प्राप्त होली गीतों के आधार पर अवध और ब्रज क्षेत्रों में गाई जाने वाली होरियों को स्वरलिपिबद्ध कर उनका विश्लेषण और तथ्य संकलन के आधार पर इनकी समानता व भिन्नता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अवध और ब्रज दोनों ही क्षेत्रों के होलीगीतों में साहित्यिक सौदंर्य देखने को मिलता है। इन दोनों क्षेत्रों के होली गीतों के साहित्य पक्ष में जो तथ्य मुख्य रूप से

उभर कर आया है वो है गीतों का अलग–अलग 'कथ्य'। जहाँ कृष्ण की लीलाओं में प्रेम को सीमाओं में नहीं बाँधा गया है, वहीं अवधक्षेत्र में राम का चरित्र केन्द्र में होने के कारण समस्त लोक गीतों मे मर्यादा की एक सीमा–रेखा खिंची प्रतीत होती है।

इस अध्ययन में इन दोनों क्षेत्रों के होली गीतों में प्रयुक्त लोक वाद्यों, तालों व रागों का भी विवरण दिया गया है। अवध व ब्रज के होली गीतों की विशेषताओं को तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से भलीभाँति स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसके अन्तर्गत, सामाजिक परिवेश, साहित्य, राग, स्वर लगाव व ताल इत्यादि पक्षों के माध्यम से इनके निजी वैशिष्ट्य को रेखांकित करने की कोशिश की गई है।

शोधकार्य का पंचम और अन्तिम अध्याय है, "अवध और ब्रज की कुछ विशिष्ट होरियों की स्वरलिपियाँ" इसमें शोध के दौरान प्राप्त होरियों की स्वरलिपियाँ व उनका तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

इस शोध विषय पर कार्य करने के दौरान पता चला कि इन दोनों क्षेत्रों के होली गीतों पर साहित्यिक कार्य तो बहुत हुये हैं पर सांगीतिक दृष्टि से कोई उल्लेखनीय कार्य मेरे देखने में नहीं आया।

अतः इस शोध के माध्यम से मैंने प्रयास किया है कि दोनों क्षेत्रों के होली गीतों के सांगीतिक वैशिष्ट्य को प्रस्तुत कर सकूं।